साक्षीमात्र है। श्रीकृष्ण साक्षी पक्षी हैं और अर्जुन फल-भोक्ता पक्षी है। सखा होने पर भी उनमें से एक स्वामी है और दूसरा सेवक। अणु-जीवात्मा का इस सम्बन्ध को भुला देना ही उसके एक वृक्ष से दूसरे वृक्ष पर जाने अर्थात् देहान्तर में कारण है। प्राकृत देहरूपी वृक्ष पर जीवात्मा जीवन के लिए घोर संघर्ष कर रहा है। किन्तु दूसरे पक्षी को परम गुरु स्वीकार करते ही, अर्थात् अर्जुन के समान शिक्षा प्राप्ति के लिए स्वेच्छापूर्वक भगवान् श्रीकृष्ण के शरणागत होते ही परतन्त्र पक्षी (जीव) सम्पूर्ण शोक से तुरन्त मुक्त हो सकता है। कठ और श्वेताश्वतर उपनिषदों में इसकी भी संपुष्टि है:

समाने वृक्षे पुरुषो निमग्नोऽनीशया शोचति मुह्यमानः।
जुष्टं यदा पश्यत्यन्यमीशमस्य महिमानमिति वीतशोकः।।

एक वृक्ष पर बैठे दोनों पक्षियों में से जो पक्षी वृक्ष के फल का भोक्ता है, वह उद्वेग-विषाद से पूर्ण हो रहा है। यदि वह किसी प्रकार अपने सखा श्रीभगवान् के सम्मुख होकर उनकी महिमा को धारण कर ले तो अविलम्ब शोकमुक्त हो जाय। अर्जुन भी इस समय अपने नित्य सखा भगवान श्रीकृष्ण के सम्मुख होकर उनसे भगवद्गीता का ज्ञान प्राप्त कर रहा है। इस भाँति स्वयं श्रीकृष्ण से श्रवण करके उनके परमं माहात्म्य को हृदयंगम करने से वह निस्सन्देह शोकमुक्त हो जायगा।

श्रीभगवान् ने इस श्लोक में अर्जुन को परामर्श दिया है कि वह अपने वृद्ध पितामह भीष्म तथा गुरु द्रोण के देहान्तर करने पर शोक न करे। उनका तर्क है कि धर्मयुद्ध में उनके कलेवरों का वध करके उन्हें नाना प्रकार के देहजन्य पापों से मुक्त कर देने में उसे तो प्रसन्न ही होना चाहिए। यज्ञाहुति अथवा धर्मयुद्ध में प्राण-विसर्जन करने वाला सकल देहजनित पापों से अविलम्ब मुक्त हो जाता है और उच्चलोक प्राप्त करता है। इस कारण अर्जुन के शोक का कोई भी युक्तिसम्मत हेतु नहीं है।

4.2

नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः।
न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुतः।।२३।।

न=नहीं; **एनम्**=इस आत्मा को; **छिन्दन्ति**=काट सकते हैं; **शस्त्राणि**=शस्त्र; **न**=नहीं; **एनम्**=इस आत्मा को; **दहति**=जला सकती है; **पावकः**=अग्नि; **न**=नहीं; **च**=तथा; **एनम्**=इसे; **क्लेदयन्ति**=गीला कर सकता है; **आपः**=जल; **न**=नहीं; **शोषयति**=सुखा सकता है; **मारुतः**=वायु।

अनुवाद

इस आत्मा को शस्त्र काट नहीं सकता, अग्नि जला नहीं सकती, जल गीला नहीं कर सकता और वायु सुखा नहीं सकती।।२३।।

तात्पर्य

ज्वाला, वर्षा, चक्रावात तथा खड्ग आदि किसी भी शस्त्र से आत्मा का वध